# gkSlyksa dh mM+ku

lSDVj v/;{kk

dsUnzh; fjtZo iqfyl cy Qseyh osYQj

,lksfl;u

fo/kk/kj uxj t;iqj ¼jktLFkku ½

# lans'k

मुझे अपार हर्ष हो रहा है कि रीजनल कावा ग्रुप केन्द्र –2 केन्द्रीय रिर्जव पुलिस बल अजमेर द्वारा प्रकाशित पत्रिका "**हौसलों की उड़ान**" एक वास्तव मे सहरानीय कदम है मुझे कई बार इस रीजनल कावा का दौरा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ । मैने देखा कि रीजनल कावा अध्यक्षा श्रीमति मनमोहन शेखावत एवं सभी सदस्याओं के अथक प्रयासो से यहां कढाई–बुनाई आदि का कार्य बहुत ही सुन्दर तरीके से अंजाम दिया जाता है तथा कावा की गतिविधियां बड़े हर्षोल्लास से सम्पन्न की जाती हैं जिसकी खूबसूरत प्रस्तुति इस पत्रिका के माध्यम से दी जा रही है।

रीजनल कावा के अथक प्रयासों से ही संस्कार स्कूल का पुनःरोद्धार किया गया एवं मुझे लगता है कि हमारा संस्कार स्कूल शहर की नामी स्कूलों से सभी मायनों में बेहतर है जिसमें वातानुकूलित कक्षाएं, इनडोर–आउटडोर गेम्स एवं अन्य संसाधनों से युक्त यह विधालय बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए हमेशा अग्रसर रहेगा।

इस प्रकार यदि मैं रीजनल कावा ग्रुप केन्द्र–2 केन्द्रीय रिर्जव पुलिस बल के प्रयासों को "**हौसलों की उड़ान**" कहूं तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। हर गतिविधि को इस रीजनल कावा द्वारा बखूबी अजांम दिया गया है।

इस अवसर पर मैं रीजनल कावा समिति, ग्रुप केन्द्र–2 में निवासरत परिवारों एवं स्टॉफ को हार्दिक बधाई देती हूँ एवं उनके उज्जवल भविष्य की कामना करती हूँ।

ऋ

उर्मिला भृगु
अध्यक्षा सैक्टर कावा
राजस्थान सैक्टर केरिपुबल
जयपुर (राजस्थान )

अध्यक्षा
रीजनल कावा ग्रुप केन्द्र –2
के0रि0पु0बल
फॉय सागर रोड़ अजमेर
(राजस्थान )

# lans'k

रीजनल कावा ग्रुप केन्द्र– दो की इलेक्ट्रोनिक मेगज़ीन "**हौसलों की उड़ान**" को प्रकाशित करते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है। इस मेगज़ीन ने एक ओर तो रीजनल कावा ग्रुप केन्द्र –2 केन्द्रीय रिर्जव पुलिस बल मे निवासरत परिवारों के विचारों की अभिव्यक्ति के लिए खुला मंच प्रदान किया है वहीं दूसरी ओर इसके द्वारा परिवारों की सृजनात्मकता को निखारने की कोशिश की गई है हम इस रीजनल कावा को और आगे ले जाने के लिए प्रतिबद्ध हैं तथा इस मेगज़ीन के माध्यम से उन कार्यों की प्रस्तुत करने की कोशिश की गई है जिनके द्वारा कैम्प में रहने वाली गुमनाम प्रतिभाऐं उभरकर के.रि.पु.बल एंव देश का नाम रौशन कर सकती हैं।

यह एक रोचक एवं चुनौतिपूर्ण कार्य है इसके लिए मैं रीजनल कावा समिति के सदस्यों, स्टॉफ, ग्रुप केन्द्र में निवासरत परिवारों एंव इसके अतिरिक्त रीजनल कावा में दौरे पर आये कावा समिति के पदाधिकारीगणों एंव कावा सैक्टर अध्यक्षा श्रीमति उर्मिला भृगु के मार्गदर्शन, निगरानी एंव सहयोग से रीजनल कावा की हर गतिविधियों को इतने अच्छे से कर पाये।

इस अवसर पर मैं इस रीजनल कावा समिति के सदस्यों, ग्रुप केन्द्र में निवासरत परिवारों एवं स्टॉफ को हार्दिक बधाई देती हूँ एवं उनके उज्जवल भविष्य की कामना करती हूँ।

मनमोहन शेखावत
अध्यक्षा रीजनल कावा
ग्रुप केन्द्र–2 केरिपबल

# jhtuy dkok lfefr

**श्रीमती मनमोहन शेखावत**
**अध्यक्षा**

**श्रीमती वीना** **श्रीमती अनु राय**

**श्रीमती लक्ष्मी चौधरी** **श्रीमती रिचा सिंह** **श्रीमती मान्यता शर्मा**

इस अंक में


चीफ पेट्रनः श्रीमति मनमोहन शेखावत

lEikndh; lykgdkj %Jhefr fjpk flag

lEiknd % Jh jkepUnz ¼mi dek ½

QkVksxzkQ l% ifjokj dY;k.k dsUnz
xzi dsUnz &2 dsfjiqcy
vtesj

Vad.k % fl0@thMh dj.k flag jkBkSM+

प्रकाशक : jhtuy dkok xzi dsUnz &2 dsOfjOiqOcy vtesj


इस अंक में प्रकाशित लेख सम्बधित लेखकों के व्यक्तिगत विचार हैं सम्पादकीय समिति का उनसे सहमत होना आवश्यक नही है।

– सम्पादक

1) खोज– ए – हूनर 1–3

2) एक कदम स्वच्छता की ओर

3) मां की सेवा

4) तितली का संघर्ष

5) योग भगाये रोग

6) हमारे लिए अमूल्य शब्द

7) समाज के अनुभवी स्तंभ

8) जिन्दगी

9) हमारे नौनिहालों की पहली पाठशाला

10) ग्रुप केन्द्र –2 के होनहार

11) वो चिड़िया जो

12) नेताजी का चश्मा

13) लोमड़ी की चतुराई

14) साक्षरता का अभियान

# [kkst & ,& gwuj

jhtuy dkok lfefr ds }kjk [kkst&,&gwuj ds rgr bl xzqi dsUnz eas fnukad &21@04@2016 dks dqy &09 fofHkUu izzfr;ksfxrkvksa dk vk;kstu fd;k x;k  ftlesa izFke] f}rh; o r`rh; LFkku ij jgus okys izfrHkkfx;ksa dks fo'ks"k iqjLdkj ,oa vU; izfr;ksfx;ksa dks lkaRouk iqjLdkj nsdj gkSlyk vQtkbZ dh xbZA

**1 vkW;y isUVhax izfr;ksfxrk** →

**2 isafly MWkbZax izfr;ksfxrk &** bl izfr;ksfxrk dks nks oxkZsa esa iw.kZ djok;k x;k ¼12 o"kZ ls cMs+ cPps ,ao 12 o"kZ rd ds cPps 'kkfey Fks  ½ ftleas cPpksa us cgqr mRlkg ls Hkkx fy;k A

**3-easgUnh izfr;ksfxrk &** jhtuy dkok lfefr ds }kjk [kkst&,&gwuj ds rgr esgUnh izfr;ksfxrk dk vk;kstu fd;k x;kA jhtuy dkok lfefr ds lkFk xzqi dsUnz eas fuokljr efgykvkas ,ao ckfydkvksa us Hkkx fy;kA

**4 jaxksyh izfr;ksfxrk &** jhtuy dkok }kjk jaxksyh izfr;ksfxrk dk Hkh vk;kstu fd;k x;k A ftlesa bl xzqi dsUnz eas fuokl djus okyh efgykvkas ,ao ckfydkvksa us cMs+ mRlkg ls Hkkx fy;kA

**5 okVj dyj isaVhax izfr;ksfxrk &** jhtuy dkok }kjk okVj dyj isUVhax izfr;ksfxrk dk Hkh vk;kstu fd;k x;kA ftleas bl xzqi dsUnz esa fuokl djus okys cPpksa us Hkkx fy;k ,ao vius fp=kas ls Hkkoukvksa dks isij ij iznf'kZr fd;kA

**6 कहानी एंव कविता लेखन प्रतियोगिता –**

# ,d dne LoPNrk dh vksj

iz/kkuea=h ds LoPN Hkkjr egk&vfHk;ku ds rgr jhtuy dkok }kjk bl xzqi dsUnz ,ao xzqi dsUnz ds vkl&ikl ds bykds eas LoPNrk vfHk;ku le;≤ ij pyk;k tk jgk gS ftlds rgr pkeq.Mk ekrk dkWyksuh ] pkeq.Mk ekrk efUnj ] esjh ekrk dkWyksuh ,ao xzqi dsUnz dh lkQ&lQkbZ dh tk jgh gS rFkk dkWyksuh okykas dks ckgj 'kkSp u tkus] ?kj esa 'kkSpky; dk fuekZ.k djus ,ao LoPNrk ds lkFk thou ;kiu djus ds fy;s izsfjr fd;k tk jgk gSA

# eka dh lsok

विजेन्द्र नराधनियाँ

कक्षा – lkroh ßcÞ

,d mRlkfgr ;qod jked`ष.k ijegal ds ikl igqpk A ijegal ds pj.kksa dks >qddj dgk fd egkReu eq>s viuk f'kष; cuk fyft, vkSj xq:ea= fnft, rkfd eaS Hkh ,d lar cu ldwaA ;qod fd ;g ckr lqudj ijegal eqLdjk,A ijegal us ;qod ls iwNk fd rqEgkjs ifjokj esa rqEgkjs vykok vkSj dkSu&dkSu gaSA

;qod us mrj fn;k dgk fd esjs ifjokj esa esjs vykok ,d cw<+h eka gSA ijegal ekSu jgs vkSj FkksM+h nsj ckn dgk fd ;qod rqe xq:ea= ysdj lk/kw D;ksa cuuk pkgrs gksA ;qod us mrj fn;k fd eSa bl HksnHkko vkSj ÅWap&uhp ds lalkj dks NksM+dj eqfDr ysuk pkgrk gwWa A ijegal us mls le>k;k dgk fd rqe eqfDr ugha ysuk pkgrs gkssA rqe bl tokcnsgh ls Mj dj Hkkx jgs gks A eqfDr vkfn rks ,d cgkuk gS D;k rqEgsa yxrk gS fd rqe lk/kq cudj fcuk fdlh nkf;Ro ds thou fcrk ikvksxsA ;g lk/kuk ugha iyk;u gS ;g viuh शkfDr dk nq:i;ksx gS blls vPNk ;g gksxk fd rqe viuh iwjh शkfDr ls eka dh lsok djks A oSls Hkh eka dks bZ'oj ds leku crk;k x;k gSA

;qod ;s ckr le> x;k A ;qod us lk/kq cuus dh ckr NksM+ nh vkSj ?kj ij ykSVdj viuh eka dh lsok eas tqV x;kA

lh[k& ekrk&firk i`Foh ij nsorqY; gSa mudk lEeku djuk pkfg,A

# frryh dk la?k"kZ

**gjhds'k**

**d{kk & uoe~ ßcÞ**

,d ckj ,d vkneh dks vius cxhps eas Vgyrs gq, ,d isM+ ij yVdrk gqvk dksdwu fn[kkbZ iM+k A og vkneh ml dksdwu dks jkstkuk ns[krk Fkk fd ml dksdwu ls ,d frryh ckgj vkuk pkgrh Fkh ijUrq og cgqr ckj dksf'k'k djus ds ckn Hkh ckgj ugha fudy ik jgh Fkh A vkneh us ns[kk fd vc frryh us gkj eku yh gS vkSj og dHkh Hkh ckgj ugha fudy ik;sxh rks mlus lkspk fd eS frryh dh enn d:a A mlus ,d dSaph ls ml dksdwu ds [kksy dks bruk cM+k dj fn;k ftlls og frryh dksdwu ls vklkuh ls ckgj vk tk, ] ;gh gqvk Hkh frryh ml dksdwu ls ckgj vk dbZ ysfdu ml frryh dk २kjhj lwtk gqvk vkSj ia[k lw[ks gq, FksA og frryh fQj dHkh Hkh ugha mM+ ikbZ A mls jsaxrs gq, ftanxh fcrkuh iM+h A ml vkneh dks le> vk;k fd blfy, dksdwu dh izfØ;k izkd`fr ds Hkjksls gS ftlls frryh dks la?kषkZ djds dksdwu ls ckgj fudyuk gS ;fn frryh fcuk la?kषkZ djs dksdqu ls ckgj fudysxh rks mM+us ;ksX; ugha cu ik;sxhA bl rjg dksbZ izk.kh fcuk la?kषkZ ;k esgur ds ;ksX; ugha cu ikrk gSaA

# ;ksx Hkxk;s jksx

jhtuy dkok }kjk le; & le; ij bl xzqi dsUnz esa fuokljr ifjokjkas ,ao ifjokj dY;k.k dsUnz es dke djus okyh efgykvkas ,ao tokuksa ds fy, ;ksxk dk;ZØeksa dk vk;kstu fd;k tk jgk gS ftlesa ;ksxk] izk.kk;ke] vuqykse & foykse lw;Z ueLdkj vkfn djk;k tkrk gSa ,oa crk;k tkrk gS fd bl Hkkx&nkSM+ Hkjh rukoiw.kZ ftUnxh eas ;ksx gh ,d ek= lgkjk gSa tks fd ges LoLFk cuk;s j[k ldrk gSa blfy, gesa vius O;Lre fnup;kZ eas ls dqN le; fudkydj ;ksx dks viukuk pkfg, ftlls 'kjhj dks LoLFk j[kk tk ldsA

# gekjs fy, vewY; 'kCn

# lekt ds vuqHkoh LraHk

एक पेड़ जितना बड़ा होता है वह उतना ही अधिक झुका हुआ होता है यानि वह उतना ही विनम्र और दुसरों को फल देना वाला होता हैं। अनुभव का कोई दुसरा विकल्प दुनियां में हैं ही नहीं अनुभव के सहारे ही दुनिया भर में बुजुर्ग लोगों ने अपनी अलग दुनियां बना रखी है। यह इस समाज का एक सच है कि जो आज जवान है कल बूढ़ा होगा और इस सच से कोई नहीं बच सकता लेकिन इस सच को जानने के बाद भी जब बूढ़े लोगों पर अत्याचार होता है तो हमें अपने को मनुष्य कहलाने में शर्म महसूस होती है। हमें समझना चाहिए कि वरिष्ठ नागरिक समाज की अमूल्य विरासत होते हैं, जिन्होने देश व समाज को बहुत कुछ दिया होता हैं, उन्हें जीवन के विभिन्न क्षेत्रों का व्यापक अनुभव होता है। आज का युवा वर्ग राष्ट्र को उंचाइयों पर ले जाने के लिए वरिष्ठ नागरिकों के अनुभव से लाभ उठा सकता है। अपने जीवन की इस अवस्था में उन्हें देखभाल और यह अहसास कराए जाने की जरूरत होती है कि वे हमारे लिए खास महत्व रखते हैं हमारे शास्त्रों में भी बुजुर्गों का सम्मान करने की राह दिखलाई गई है।

यदापि पोष मांतर पुत्रः प्रभुदितो ध्यान।
इतादगे अनृणो भवाम्यहतौ पितरौ ममां।।

अर्थात जिन माता–पिता ने अपने अथक प्रयत्नों से पाल–पोसकर मुझे बड़ा किया है, अब मेरे बड़े होने पर जब वे अशक्त हो गये हैं तो वे जनक–जननी किसी प्रकार से भी पीड़ित न हो, इस हेतु मैं उनकी सेवा सत्कार से उन्हें संतुष्ट कर रहा हूँ। इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए अन्तराष्ट्रीय बुजुर्ग दिवस पर रीजनल कावा समिति ने कार्यक्रम का आयोजन किया । जिसमें कैम्पस के नजदीक रहने वाले वरिष्ठ नागरिकों को बुलाया गया व उनके अनुभवों को ध्यान से सुना व किसी भी प्रकार कि समस्याओं के बारे में भी जानकारी ली व रीजनल कावा द्वारा चलाये गये **ऑल्ड ऐज होम** के बारे में बताया कि आप ज्यादा से ज्यादा वहां पधारें तथा उसका लाभ उठायें। उन्हें सम्मानित किया व जलपान कराया गया। इस अवसर पर स्वास्थ चैकअप कैम्प का भी आयोजन किया गया।

# जिन्दगी

**नीतू पंवार**

अब तक की जिन्दगी को कुछ इस तरह जीया ।

तूफान में जला हो जैसे कोई दीया।।

हैं! ईश्वर तूने अच्छा किया जो मुझे गरीब कर दीया।

जिनसे मैं दूर हो गई उनके करीब कर दीया।।

न जीने में सुख हैं न मरने मे मजा हैं

गरीबी में पैदा हुए उसकी यही सजा हैं

पी गए खून खा गए गोश्त और क्या चाहिए बताओ मेरे दोस्त।

मैं दर्द से दुखी नहीं दुख इस बात का हैं, यह जो इन्सान हैं उनकी देह तो मोम की हैं मगर दिल इस्पात का हैं

रंग बिरंगे फूलों की पहचान हैं जिन्दगी, डूबती हुई किश्ती के हौसलों की उड़ान है जिन्दगी।

सोई हुई ख्वाबों जैसी बेरंग सी दुनिया मे रंगों का दुसरा नाम हैं जिन्दगी।।

खो जाए जिनकी एक धुन में दुनिया सारी, कोयल की कूक सी बंशी की मीठी तान हैं जिन्दगी।

कोई कहे पहेली कोई कहे बेबसी, मुश्किलों में सफलता पाने का इम्तियान है जिन्दगी।

मंजिल आसान है या कठीन चलने के सफर में बुजुर्गों की कमान है जिन्दगी।

न जाने लोग फूलों को भी बोझ समझ बैठते हैं मुसीबत ही सही मेरी जान है जिन्दगी।।

# gekjs ukSfugkyks dh igyh ikB'kkyk

bl xqzi dsUnz eas fuokl djus okys ifjokjkas ds cPpkssa dks izkjfEHkd f'k{kk nsus ds fy, fnukad&13 tqu 1989 dks ekUVsljh Ldwy ,ad iqjkus Hkou esa dh xbZ Fkh bl Ldwy dh 'kq:vkr 10 cPpkas dks i<+kuss ls 'kq: dh xbZ A Jhefr

eueksgu 'ks[kkor v/;{kk jhtuy dkok dk dk;ZHkkj xzg.k djus ds ckn lcls igys bl iqjkus Hkou ,ao ttZj Hkou eas py jgh eksUVsljh Ldwy dk fujh{k.k djds blds iqujks)kj dk chM+k mBk;kA tks fd fnuakd 15@08@2014 dks bldk uohuhdj.k iw.kZ gqvk ,oa lkFk gh Ldwy dk uke eksUVsljh Ldqy ls cnydj laLdkj lys Ldqy j[kk x;k rFkk blesa okrkuqdwfyr d{kk,a] jax&jksxu ] >wyksa dh ejEer ,oa cPpksa dks vkdf"kZr djus okys feDdh ekml vkfn ds fp=kas }kjk ltk;k x;k ,ao u;s LVkQ dh fu;qDrh dj ukeh f'k{k.k laLFkkukas dh rtZ ij cPpkas dks f'k{kk nh tk jgh gS orZeku esa ;g Ldwy 'kgj ds ukeh Ldwyksa es 'kqekj gS ,ao 90 cPpkas ds lkFk lapkfyr gS rFkk cPpkas ds fy, bUMksj ,ao vkmV Mksj xse dh O;oLFkk

dh xbZ gS A

**नौनिहालों के भविष्यनिर्माता**

श्रीमति रिचा सिंह
प्रधानाध्यापिका

एम.ए.(वूमेन्स स्टेडी)

सुश्री सुजाता बेवर
अध्यापिका
एम.ए. राजनीति शास्त्र

श्रीमति माला सिंह
अध्यापिका
बी.ए.

श्रीमति सरोज कंवर
आया (बाई )
दशम् उर्तीण

**संस्कार स्कूल में उपलब्ध सुविधाएं–**

**किड्स प्ले जोन –** संस्कार स्कूल में किड्स प्ले जोन सुविधा उपलब्ध कराई गई है जिसमें नियमित रूप से 40 बच्चे आते हैं तथा किड्स प्ले जोन में बच्चों की देखभाल के लिए आया (बाई) को लगाया गया है तथा इसमें सभी प्रकार के खिलोने उपलब्ध कराये गये हैं जिससे ग्रुप केन्द्र में निवास करने वाले परिवार लांभान्वित हो रहे हैं।

**झूले–** संस्कार स्कुल के बच्चों के लिए आउट डोर के लिए खिलोनों की व्यवस्था की गई है जिसमें बच्चों को पढ़ाई के साथ मनोरंजनात्मक मौहाल मिल रहा है।

रु

# xzqi dsUnz&nks ds gksugkj

नाम – बबीता मान
पिताजी का नाम – भू०पूर्व सिपाही/चालक जगमाल सिंह
उपलब्धि –राष्ट्रपति पुरस्कार स्काउट व गाईड
सामाज सेवा व ईमानदारी के लिए चयनित किया गया है







Ukke & lfer Hkkj}kt
i= go0 peu yky
miyfC/k&राष्ट्रीय प्रतियोगिता
jkT; Ldhfiax MCcy Mp fÝ LVkby
LFkku & iFke

uke & dyhni flg
i= flikgh ij.k pUn
उपलब्धि–राष्ट्रीय प्रतियोगिता
ckLdsV cky
LFkku & f}rh;

uke& ftrUnz d0 xxZ
i= ekxhyky
उपलब्धि–राष्ट्रीय प्रतियोगिता
ckfDlax LFkku & f}rh;

uke & e/kq eh.kk
i=h l-m-fujh- efgiky flg
उपलब्धि–राष्ट्रीय प्रतियोगिता
leg uR; LFkku & f}rh;

uke & jeu lkyadh
i= fl0 frjiky jke
उपलब्धि–Golden
Badge Arrow LdkmV o xkbM

## वो चिड़िया जो

**किर्तिका**

**कक्षा – अष्टम**

चिड़िया जो,चोच मारकर

दूध –भरे  जूड़ी के दाने।

रूचि से रस खा लेती है,

वह छोटी संतोषी चिड़िया

नीले पंखोंवाली मैं हूँ।

तुझे अन्न से बहुत प्यार है

वह चिड़ीया जो कंठ खोलकर

बूढ वन बाबा के खातिर

रस उड़ेलकर गा लेती हैं

वह छेटी मुंह बोली चिड़िया,

निले पंखोवाली मैं हूँ।

मुझे विजन से बहुत प्यार है।

वह चिड़िया जो चोच मारकर,

चढ़ी नदी का दिल टटोलकर

जल का मोती ले जाती है

वह छोटी गरबीली चिड़िया

नीले पंखों वाली मैं हूँ।

मुझे नदी से बहुत प्यार है।

# नेताजी का चश्मा

नितेश चौधरी
कक्षा – दशम "ब"

बहुत समय पहले कि बात है एक कस्बे में सुभाष चन्द्र बोस का पुतला बनाया गया । कुछ दिनों बाद उस कस्बे में एक हवलदार साहब आए और एक चौराहे पर पान की दुकान पर रूके और पूछने लगे कि यह नेताजी का पुतला किसने बनाया बहुत अच्छा है । पान वाले ने दुकान के पीछे पान थूका और आगे आकर कहा की यह तो एक स्कूल के मास्टर जी ने बनाया है हवलदार साहब ने कहा क्या एक स्कूल के मास्टर ने इतनी खूबसूरत तस्वीर बनाई है क्या बात है फिर हवलदार साहब ने एक चीज पर गौर किया की मूर्ती तो पत्थर की बनी है पर चश्मा रीयल है यह कैसे? पान वाले ने कहा कि यह तो मुझे पता नहीं । यह सुनकर हवलदार साहब चले गये। फिर अगले दिन हवलदार साहब आ गये फिर एक पान मांगा और फिर मूर्ति की तरफ देखा। आज चश्मा था पर दूसरा था। हवलदार साहब ने पान वाले से पूछा की कल चश्मा चौकोर था और नेताजी का चश्मा गोल कैसे  हो गया । क्या नेताजी नये चश्मे लाते हैं ? पानवाला फिर पान की पीक थूकता है और कहता कि कैप्टन रोज आकर चश्मा बदल देता है । हवलदार साहब यह कैप्टन कौन है यह कोई फौजी है। इससे पहल पान वाला कुछ बोलता  हवलदार साहब चले जाते हैं कई दिनों तक ऐसा चलता रहा हर रोज चश्मा बदलता रहा फिर हवलदार साहब पान की दुकान पर आये और बोले की अब तो बताओ की कैप्टन कौन है वो फिर पान की पीक थूक कर बोला की वो आ रहा है खुद देख लो हवलदार साहब ने देखा और उनके आँखो में आँसू आ गए क्योंकि वो आदमी लंगड़ा था और उसके एक हाथ में डिब्बा और दूसरे हाथ में बॉस की लकड़ी थी और उसमें चश्मे थे वो रोज चश्मा बदलता एक बार हवलदार साहब दो तीन महिने  के लिए बाहर चले गये फिर जब आये तो सोचा ना आज पान खाएंगे और न ही मुर्ति की ओर देखेंगे पर जैसे ही वहाँ आए और अपनी गाड़ी रोकी तो नजर मूर्ति की ओर

घुमाई तो देखा कि आज चश्मा नहीं है। फिर उसने पान वाले से पूछा की आज चश्मा क्यों नहीं है उसने अपने आंसू पोंछते हुए कहा की कैप्टन का देहान्त हो गया है अगले दिन उसने बोस की मुर्ति के नीचे चश्मा पड़ा देखा तो उनकी आँखो में आंसू आ गए । यह देश के प्रति प्रेम का भाव है।

# लोमड़ी की चतुराई

**आकाश वर्मा**
**कक्षा – सप्तम**

एक जंगल मे एक शेर रहता था वह बहुत बूढा हो चुका था । वह शिकार भी नही कर सकता था। उसे कई–कई दिन भूखा रहना पड़ता था एक दिन वह भूख से बेचैन होकर शिकार के लिए निकल पड़ा उसने शिकार बहूत खोजा पर उसे कोई नहीं मिला वह बहुत थक गया तभी उसे एक गुफा दिखाई दी उसने सोचा की जरूर यह गुफा किसी जानवर की होगी वह उसके अंदर चला गया तभी थोड़ी देर बाद लोमड़ी आ गई । वह गुफा लोमड़ी की थी।

लोमड़ी उसके अंदर जाने ही वाली थी तभी लोमड़ी को शेर के पंजे के निशान दिखाई दिये लोमड़ी ने तरकीब निकाली और बोली ओ गुफा क्या तुम मुझसे बोलोगी नहीं तुमे पता नहीं कि तुमने मुझसे वादा किया था कि तुम मुझसे बातें करोगी तभी मैं अंदर आउंगी । तभी शेर ने सोचा कि अगर लोमड़ी चली गई तो मैं भूखा मर जांउगा शेर ने मधूर वाणी से बोला लोमड़ी बहन रूको मेरी जरा ऑख लग गई थी। लोमड़ी को पता लग गया की अंदर शेर बैठा था और लोमड़ी ने कहा अरे मूर्ख शेर तुझे इतना ही पता नही हैं कि गुफा कभी बोलती हैं और लोमड़ी चली गई।

# साक्षरता अभियान

**नितिन गोदारा**

ढूंढ कहीं जंगल से तिनका,

चिड़ीया बीन–बीन कर लाती।

जोड़–जोड़ इन तिनकों का,

पक्षी अपना वह नीड़ रचाती।।

राहगीर पग बढ़ा–बढ़ा कर,

निज पथ पर चलते है ।

हिम्मत और विश्वास जगाकर,

मंजिल को पा जाते हैं।

जल की छोटी–छोटी बून्दें,

टपक–टपक कर घट भर देती।

छेद उस में यदि छोटासा भी करदे,

बून्दें घट खाली कर देती।

थोड़ा–थोड़ा प्रतिदिन पढ़कर ,

हम ज्ञानी बन सकते हैं।

रोज बचाए यदि एक पैसा,

तो धन एकत्रित कर सकते हैं।

# eka dh lsok

विजेन्द्र नराधनियॉ
कक्षा – lkroh ßcÞ

,d mRlkfgr ;qod jked`ष.k ijegal ds ikl igqpk A ijegal ds pj.kksa dks >qddj dgk fd egkReu eq>s viuk f'kष; cuk fyft, vkSj xq:ea= fnft, rkfd eaS Hkh ,d lar cu ldwaA ;qod fd ;g ckr lqudj ijegal eqLdjk,A ijegal us ;qod ls iwNk fd rqEgkjs ifjokj esa rqEgkjs vykok vkSj dkSu&dkSu gaSA

;qod us mrj fn;k dgk fd esjs ifjokj esa esjs vykok ,d cw<+h eka gSA ijegal ekSu jgs vkSj FkksM+h nsj ckn dgk fd ;qod rqe xq:ea= ysdj lk/kw D;ksa cuuk pkgrs gksA ;qod us mrj fn;k fd eSa bl HksnHkko vkSj ÅWap&uhp ds lalkj dks NksM+dj eqfDr ysuk pkgrk gwWa A ijegal us mls le>k;k dgk fd rqe eqfDr ugha ysuk pkgrs gkssA rqe bl tokcnsgh ls Mj dj Hkkx jgs gks A eqfDr vkfn rks ,d cgkuk gS D;k rqEgsa yxrk gS fd rqe lk/kq cudj fcuk fdlh nkf;Ro ds thou fcrk ikvksxsA ;g lk/kuk ugha iyk;u gS ;g viuh २kfDr dk nq:i;ksx gS blls vPNk ;g gksxk fd rqe viuh iwjh २kfDr ls eka dh lsok djks A oSls Hkh eka dks bZ'oj ds leku crk;k x;k gSA

;qod ;s ckr le> x;k A ;qod us lk/kq cuus dh ckr NksM+ nh vkSj ?kj ij ykSVdj viuh eka dh lsok eas tqV x;kA

lh[k& ekrk&firk i`Foh ij nsorqY; gSa mudk lEeku djuk pkfg,A

# frryh dk la?k"kZ

 **gjhds'k**

**d{kk & uoe~ ßcÞ**

,d ckj ,d vkneh dks vius cxhps eas Vgyrs gq, ,d isM+ ij yVdrk gqvk dksdwu fn[kkbZ iM+k A og vkneh ml dksdwu dks jkstkuk ns[krk

Fkk fd ml dksdwu ls ,d frryh ckgj vkuk pkgrh Fkh ijUrq og cgqr ckj dksf'k'k djus ds ckn Hkh ckgj ugha fudy ik jgh Fkh A vkneh us ns[kk fd vc frryh us gkj eku yh gS vkSj og dHkh Hkh ckgj ugha fudy ik;sxh rks mlus lkspk fd eS frryh dh enn d:a A mlus ,d dSaph ls ml dksdwu ds [kksy dks bruk cM+k dj fn;k ftlls og frryh dksdwu ls vklkuh ls ckgj vk tk, ] ;gh gqvk Hkh frryh ml dksdwu ls ckgj vk dbZ ysfdu ml frryh dk २kjhj lwtk gqvk vkSj ia[k lw[ks gq, FksA og frryh fQj dHkh Hkh ugha mM+ ikbZ A mls jsaxrs gq, ftanxh fcrkuh  iM+h A ml vkneh dks le> vk;k fd blfy, dksdwu dh izfØ;k izkd`fr ds Hkjksls gS ftlls frryh dks la?kषkZ djds dksdwu ls ckgj fudyuk gS ;fn frryh fcuk la?kषkZ djs dksdqu ls ckgj fudysxh rks mM+us ;ksX; ugha cu ik;sxhA bl rjg dksbZ izk.kh fcuk la?kषkZ ;k esgur ds ;ksX; ugha cu ikrk gSaA

# ;ksx Hkxk;s jksx

jhtuy dkok }kjk le; & le; ij bl xzqi dsUnz esa fuokljr ifjokjkas ,ao ifjokj dY;k.k dsUnz es dke djus okyh efgykvkas ,ao tokuksa ds fy, ;ksxk dk;ZØeksa dk vk;kstu fd;k tk jgk gS ftlesa ;ksxk] izk.kk;ke] vuqykse & foykse lw;Z ueLdkj vkfn djk;k tkrk gSa ,oa crk;k tkrk gS  fd bl Hkkx&nkSM+ Hkjh rukoiw.kZ ftUnxh eas ;ksx gh ,d ek= lgkjk gSa tks fd ges LoLFk cuk;s

j[k ldrk gSa blfy, gesa vius O;Lre fnup;kZ eas ls dqN le; fudkydj ;ksx dks viukuk pkfg, ftlls 'kjhj dks LoLFk j[kk tk ldsA

# gekjs fy, vewY; 'kCn

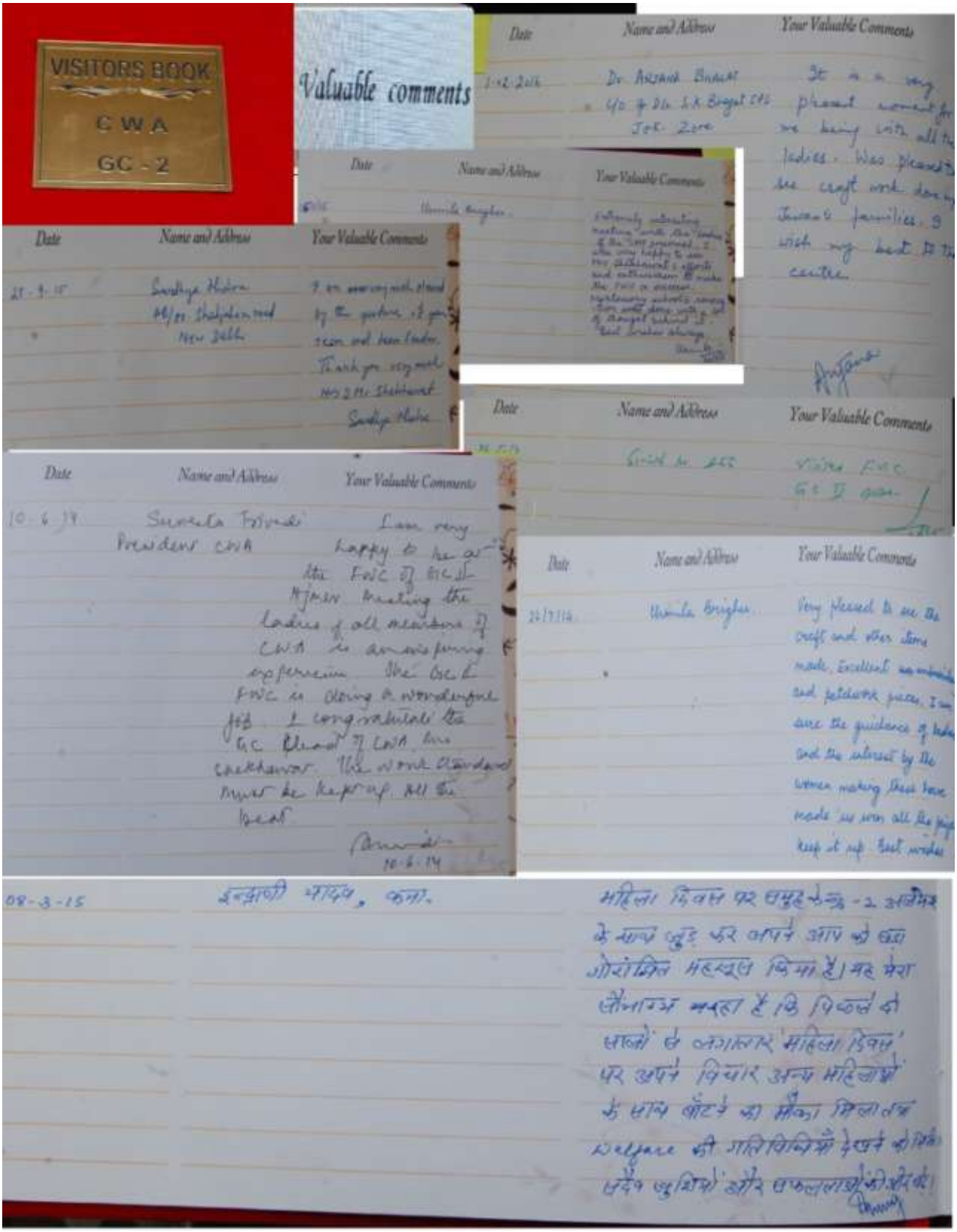


lekt ds vuqHkoh LraHk

एक पेड़ जितना बड़ा होता है वह उतना ही अधिक झुका हुआ होता है यानि वह उतना ही विनम्र और दुसरों को फल देना वाला होता हैं। अनुभव का कोई दुसरा विकल्प दुनियां में हैं ही नहीं अनुभव के सहारे ही दुनिया भर में बुजुर्ग लोगों ने अपनी अलग दुनियां बना रखी है। यह इस समाज का एक सच है कि जो आज जवान है कल बूढ़ा होगा और इस सच से कोई नहीं बच सकता लेकिन इस सच को जानने के बाद भी जब बूढ़े लोगों पर अत्याचार होता है तो हमें अपने को मनुष्य कहलाने में शर्म महसूस होती है। हमें समझना चाहिए कि वरिष्ठ नागरिक समाज की अमूल्य विरासत होते हैं, जिन्होने देश व समाज को बहुत कुछ दिया होता हैं, उन्हें जीवन के विभिन्न क्षेत्रों का व्यापक अनुभव होता है। आज का युवा वर्ग राष्ट्र को उंचाइयों पर ले जाने के लिए वरिष्ठ नागरिकों के अनुभव से लाभ उठा सकता है। अपने जीवन की इस अवस्था में उन्हें देखभाल और यह अहसास कराए जाने की जरूरत होती है कि वे हमारे लिए खास महत्व रखते हैं हमारे शास्त्रों में भी बुजुर्गों का सम्मान करने की राह दिखलाई गई है।

यदापि पोष मांतर पुत्रः प्रभुदितो ध्यान।
इतादगे अनृणो भवाम्यहतौ पितरौ ममां।।

अर्थात जिन माता–पिता ने अपने अथक प्रयत्नों से पाल–पोसकर मुझे बड़ा किया है, अब मेरे बड़े होने पर जब वे अशक्त हो गये हैं तो वे जनक–जननी किसी प्रकार से भी पीड़ित न हो, इस हेतु मैं उनकी सेवा सत्कार से उन्हें संतुष्ट कर रहा हूँ। इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए अन्तराष्ट्रीय बुजुर्ग दिवस पर रीजनल कावा समिति ने कार्यक्रम का आयोजन किया । जिसमें कैम्पस के नजदीक रहने वाले वरिष्ठ नागरिकों को बुलाया गया व उनके अनुभवों को ध्यान से सुना व किसी भी प्रकार कि समस्याओं के बारे में भी जानकारी ली व रीजनल कावा द्वारा चलाये गये **ऑल्ड ऐज होम** के बारे में बताया कि आप ज्यादा से ज्यादा वहां पधारें तथा उसका लाभ उठायें। उन्हें सम्मानित किया व जलपान कराया गया। इस अवसर पर स्वास्थ चैकअप कैम्प का भी आयोजन किया गया।

# जिन्दगी

**नीतू पंवार**

अब तक की जिन्दगी को कुछ इस तरह जीया ।

तूफान में जला हो जैसे कोई दीया।।

हैं! ईश्वर तूने अच्छा किया जो मुझे गरीब कर दीया।

जिनसे मैं दूर हो गई उनके करीब कर दीया।।

न जीने में सुख हैं न मरने मे मजा हैं

गरीबी में पैदा हुए उसकी यही सजा हैं

पी गए खून खा गए गोश्त और क्या चाहिए बताओ मेरे दोस्त।

मैं दर्द से दुखी नहीं दुख इस बात का हैं, यह जो इन्सान हैं उनकी देह तो मोम की हैं मगर दिल इस्पात का हैं

रंग बिरंगे फूलों की पहचान हैं जिन्दगी, डूबती हुई किश्ती के हौसलों की उड़ान है जिन्दगी।

सोई हुई ख्वाबों जैसी बेरंग सी दुनिया मे रंगों का दुसरा नाम हैं जिन्दगी।।

खो जाए जिनकी एक धुन में दुनिया सारी, कोयल की कूक सी बंशी की मीठी तान हैं जिन्दगी।

कोई कहे पहेली कोई कहे बेबसी, मुश्किलों में सफलता पाने का इम्तियान है जिन्दगी।

मंजिल आसान है या कठीन चलने के सफर में बुजुर्गों की कमान है जिन्दगी।

न जाने लोग फूलों को भी बोझ समझ बैठते हैं मुसीबत ही सही मेरी जान है जिन्दगी।।

gekjs ukSfugkyks dh igyh ikB"kkyk

bl xqzi dsUnz eas fuokl djus okys ifjokjkas ds cPpkssa dks izkjfEHkd f'k{kk nsus ds fy, fnukad&13 tqu 1989 dks ekUVsljh Ldwy ,ad iqjkus Hkou esa dh xbZ Fkh bl Ldwy dh 'kq:vkr 10 cPpkas dks i<+kuss ls 'kq: dh xbZ A Jhefr eueksgu 'ks[kkor v/;{kk jhtuy dkok dk dk;ZHkkj xzg.k djus ds ckn lcls igys bl iqjkus Hkou ,ao ttZj Hkou eas py jgh eksUVsljh Ldwy dk fujh{k.k djds blds iqujks)kj dk chM+k mBk;kA tks fd fnuakd 15@08@2014 dks bldk uohuhdj.k iw.kZ gqvk ,oa lkFk gh Ldwy dk uke eksUVsljh Ldqy ls cnydj laLdkj lys Ldqy j[kk x;k rFkk blesa okrkuqdwfyr d{kk,a] jax&jksxu ] >wyksa dh ejEer ,oa cPpksa dks vkdf"kZr djus okys feDdh ekml vkfn ds fp=kas }kjk ltk;k x;k ,ao u;s LVkQ dh fu;qDrh dj ukeh f'k{k.k laLFkkukas dh rtZ ij cPpkas dks f'k{kk nh tk jgh gS orZeku esa ;g Ldwy 'kgj ds ukeh Ldwyksa es 'kqekj gS ,ao 90 cPpkas ds lkFk lapkfyr gS rFkk cPpkas ds fy, bUMksj ,ao vkmV Mksj xse dh O;oLFkk dh xbZ gS A

# नौनिहालों के भविष्यनिर्माता

श्रीमति रिचा सिंह
प्रधानाध्यापिका
एम.ए.(वूमेन्स स्टेडी)

सुश्री सुजाता बंवर
अध्यापिका
एम.ए. राजनीति शास्त्र

श्रीमति माला सिंह
अध्यापिका
बी.ए.

श्रीमति सरोज कंवर
आया (बाई )
दशम् उर्तीण

## संस्कार स्कूल में उपलब्ध सुविधाएं–

**किड्स प्ले जोन –** संस्कार स्कूल में किड्स प्ले जोन सुविधा उपलब्ध कराई गई है जिसमें नियमित रूप से 40 बच्चे आते हैं तथा किड्स प्ले जोन में बच्चों की देखभाल के लिए आया (बाई) को लगाया गया है तथा इसमें सभी प्रकार के खिलोने उपलब्ध कराये गये हैं जिससे ग्रुप केन्द्र में निवास करने वाले परिवार लांभान्वित हो रहे हैं।

**झूले–** संस्कार स्कुल के बच्चों के लिए आउट डोर के लिए खिलोनों की व्यवस्था की गई है जिसमें बच्चों को पढ़ाई के साथ मनोरंजनात्मक मौहाल मिल रहा है।

# xzqi dsUnz&nks ds gksugkj

नाम – बबीता मान
पिताजी का नाम – भू0पूर्व सिपाही/चालक जगमाल सिंह
उपलब्धि –राष्ट्रपति पुरस्कार स्काउट व गाईड
सामाज सेवा व ईमानदारी के लिए चयनित किया गया है




Ukke & lfer Hkkj}kt
i= go0 peu yky
उपलब्धि–राष्ट्रीय प्रतियोगिता
jki Ldhfix MCcy Mp fÝ LVkby
LFkku & iFke




uke & dynhi flg
i= flikgh ij.k pUn
उपलब्धि–राष्ट्रीय प्रतियोगिता
ckLdV cky
LFkku & f}rh;

uke& ftrUn dO xx
i= ekxhyky
उपलब्धि–राष्ट्रीय प्रतियोगिता
ckfDlx LFkku & f}rh;
o xkbM



uke & e/k eh.kk
i=h l-m-fujh- efgiky flg
उपलब्धि–राष्ट्रीय प्रतियोगिता
leg uR; LFkku & f}rh;

uke & jeu lkydh
i= flO frjiky jke
miyfC/k&Golden
Badge Arrow LdkmV

# वो चिड़िया जो

**किर्तिका**
**कक्षा – अष्ठम**

चिड़िया जो,चोच मारकर
दूध –भरे  जूड़ी के दाने।
रूचि से रस खा लेती है,
वह छोटी संतोषी चिड़िया
नीले पंखोंवाली मैं हूँ।
तुझे अन्न से बहुत प्यार है

वह चिड़ीया जो कंठ खोलकर
बूढ वन बाबा के खातिर
रस उड़ेलकर गा लेती हैं
वह छोटी मुंह बोली चिड़िया,
निले पंखोवाली मैं हूँ।
मुझे विजन से बहुत प्यार है।

वह चिड़िया जो चोच मारकर,
चढ़ी नदी का दिल टटोलकर
जल का मोती ले जाती है
वह छोटी गरबीली चिड़िया
नीले पंखों वाली मैं हूँ।
मुझे नदी से बहुत प्यार है।

# नेताजी का चश्मा

नितेश चौधरी
कक्षा – दशम "ब"

बहुत समय पहले कि बात है एक कस्बे में सुभाष चन्द्र बोस का पुतला बनाया गया । कुछ दिनों बाद उस कस्बे में एक हवलदार साहब आए और एक चौराहे पर पान की दुकान पर रूके और पूछने लगे कि यह नेताजी का पुतला किसने बनाया बहुत अच्छा है । पान वाले ने दुकान के पीछे पान थूका और आगे आकर कहा की यह तो एक स्कूल के मास्टर जी ने बनाया है हवलदार साहब ने कहा क्या एक स्कूल के मास्टर ने इतनी खूबसूरत तस्वीर बनाई है क्या बात है फिर हवलदार साहब ने एक चीज पर गौर किया की मूर्ती तो पत्थर की बनी है पर चश्मा रीयल है यह कैसे? पान वाले ने कहा कि यह तो मुझे पता नहीं । यह सुनकर हवलदार साहब चले गये। फिर अगले दिन हवलदार साहब आ गये फिर एक पान मांगा और फिर मूर्ति की तरफ देखा। आज चश्मा था पर दूसरा था। हवलदार साहब ने पान वाले से पूछा की कल चश्मा चौकोर था और नेताजी का चश्मा गोल कैसे हो गया । क्या नेताजी नये चश्मे लाते हैं ? पानवाला फिर पान की पीक थूकता है और कहता कि कैप्टन रोज आकर चश्मा बदल देता है । हवलदार साहब यह कैप्टन कौन है यह कोई फौजी है। इससे पहल पान वाला कुछ बोलता हवलदार साहब चले जाते हैं कई दिनों तक ऐसा चलता रहा हर रोज चश्मा बदलता रहा फिर हवलदार साहब पान की दुकान पर आये और बोले की अब तो बताओ की कैप्टन कौन है वो फिर पान की पीक थूक कर बोला की वो आ रहा है खुद देख लो हवलदार साहब ने देखा और उनके आँखो में आँसू आ गए क्योंकि वो आदमी लंगड़ा था और उसके एक हाथ में डिब्बा और दूसरे हाथ में बॉस की लकड़ी थी और उसमें चश्मे थे वो रोज चश्मा बदलता एक बार हवलदार साहब दो तीन महिने के लिए बाहर चले गये फिर जब आये तो सोचा ना आज पान खाएंगे और न ही मुर्ति की ओर देखेंगे पर जैसे ही वहाँ आए और अपनी गाड़ी रोकी तो नजर मूर्ति की ओर घुमाई तो देखा कि आज चश्मा नहीं है। फिर उसने पान वाले से पूछा की आज चश्मा क्यों नहीं है उसने अपने आंसू पोंछते हुए कहा की कैप्टन का देहान्त हो गया है अगले दिन उसने बोस की मुर्ति के नीचे चश्मा पड़ा देखा तो उनकी आँखो में आंसू आ गए । यह देश के प्रति प्रेम का भाव है।

# लोमड़ी की चतुराई

**आकाश वर्मा**
**कक्षा – सप्तम**

एक जंगल मे एक शेर रहता था वह बहुत बूढा हो चुका था । वह शिकार भी नही कर सकता था। उसे कई– कई दिन भूखा रहना पड़ता था एक दिन वह भूख से बेचैन होकर शिकार के लिए निकल पड़ा उसने शिकार बहूत खोजा पर उसे कोई नहीं मिला वह बहुत थक गया तभी उसे एक गुफा दिखाई दी उसने सोचा की जरूर यह गुफा किसी जानवर की होगी वह उसके अंदर चला गया तभी थोड़ी देर बाद लोमड़ी आ गई । वह गुफा लोमड़ी की थी।

लोमड़ी उसके अंदर जाने ही वाली थी तभी लोमड़ी को शेर के पंजे के निशान दिखाई दिये लोमड़ी ने तरकीब निकाली और बोली ओ गुफा क्या तुम मुझसे बोलोगी नहीं तुमे पता नहीं कि तुमने मुझसे वादा किया था कि तुम मुझसे बातें करोगी तभी मैं अंदर आउंगी । तभी शेर ने सोचा कि अगर लोमड़ी चली गई तो मैं भूखा मर जांउगा शेर ने मधूर वाणी से बोला लोमड़ी बहन रूको मेरी जरा ऑख लग गई थी। लोमड़ी को पता लग गया की अंदर शेर बैठा था और लोमड़ी ने कहा अरे मूर्ख शेर तुझे इतना ही पता नही हैं कि गुफा कभी बोलती हैं और लोमड़ी चली गई।

# साक्षरता अभियान

**नितिन गोदारा**

ढूंढ कहीं जंगल से तिनका,
चिड़ीया बीन–बीन कर लाती।
जोड़–जोड़ इन तिनकों का,
पक्षी अपना वह नीड़ रचाती।।

राहगीर पग बढ़ा–बढ़ा कर,
निज पथ पर चलते है ।
हिम्मत और विश्वास जगाकर,
मंजिल को पा जाते हैं।

जल की छोटी–छोटी बून्दें,
टपक–टपक कर घट भर देती।
छेद उस में यदि छोटासा भी करदे,
बून्दें घट खाली कर देती।

थोड़ा–थोड़ा प्रतिदिन पढ़कर ,
हम ज्ञानी बन सकते हैं।
रोज बचाए यदि एक पैसा,
तो धन एकत्रित कर सकते हैं।